P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

सुल्तानपुर जनपद (उ0प्र0) में जनसंख्या गत्यात्मकता

रवि कुमार
शोध छात्र,
भूगोल विभाग,
टी.डी.पी.जी.
जौनपुर उ0प्र0

सारांश

मानव संसाधन किसी देश की सबसे बड़ी पूँजी होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में सुल्तानपुर जनपद की जनसंख्या गत्यात्मकता का अध्ययन किया गया है। किसी क्षेत्र की जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन के द्वारा वहाँ की आर्थिक प्रगति, सामाजिक–सांस्कृतिक दशाओं, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, राजनीतिक विचारों एवं दशाओं आदि का पता चलता है। यद्यपि जनसंख्या विकास का सूचक होती है, किन्तु इसका सही नियोजन न होने के कारण किसी भी क्षेत्र में अनेक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न होने लगती हैं जो कि किसी भी क्षेत्र के विघटन का कारण बनती है।

मुख्य शब्द : जनसंख्या गत्यात्मकता, संसाधन, सामाजिक–सांस्कृतिक,आर्थिक, पर्यावरण।

प्रस्तावना

जनसंख्या भूगोल के अध्ययन में मानव संसाधन का विशेष महत्व है। प्रकृति का कोई भी पदार्थ तब तक संसाधन नहीं बनता, जब तक कि मानव अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए उसका उपयोग नहीं करता है। प्रकृति प्रदत्त विभिन्न जैविक तथा अजैविक संसाधनों का उपयोग मानव अपनी जरूरत के हिसाब से करता है।

किसी भी राष्ट्र की उन्नति वहाँ के मानवीय संसाधन की संगठन क्षमता पर निर्भर करती है। मानव संसाधन किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी पूँजी होती है। किन्तु इस मानव संसाधन का जब समुचित उपयोग नहीं किया जाता है, तो यह किसी भी देश पर बोझ बन जाती है। जनसंख्या एक प्रमुख संसाधन है, बशर्ते कि इसका योजनाबद्ध एवं प्रभावी रूप से उपयोग हो।

किसी क्षेत्र के भौगोलिक अध्ययन में जनसंख्या एवं उसकी विशेषताओं का अध्ययन एक महत्वपूर्ण पक्ष होता है, क्योंकि मानव एक भौगोलिक कारक के साथ संसाधन भी है। वह विविध संसाधनों का प्रणेता, उपभोक्ता, एवं सांस्कृतिक पर्यावरण का निर्माणकर्ता भी है। जनांकिकी तथा जनसंख्या में, किसी क्षेत्र की जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन का विशेष महत्व होता है, क्योंकि इसके द्वारा वहां की सामाजिक–आर्थिक प्रगति, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा राजनीतिक दशाओं आदि का पता चलता है। अतः जनसंख्या गत्यात्मकता का तात्पर्य, जनसंख्या वृद्धि, घनत्व, लिंगानुपात तथा साक्षरता आदि में तात्कालिक परिवर्तन से है। वर्तमान समय में जनसंख्या गत्यात्मकता के कारण क्षेत्र विशेष में सघनता, जनसंख्या के अनुपात में संसाधनों के अभाव के कारण सामाजिक, आर्थिक तथा पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हुई है।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोध पत्र में विभिन्न स्त्रोतों का अध्ययन किया गया है। डॉ0 एस0डी0 मौर्य की पुस्तक 'जनसंख्या भूगोल' (2017) से जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात, प्रवास। डॉ0 आर0सी0 चाँदना की पुस्तक 'जनसंख्या भूगोल' (2014) से घनत्व, साक्षरता। डॉ0 सविन्द्र सिंह की पुस्तक (2016) 'पर्यावरण भूगोल' से जनसंख्या का पर्यावरण से संबंध। डॉ0 जगदीश सिंह की पुस्तक 'आर्थिक भूगोल' (2017) से जनसंख्या तथा संसाधन का संबन्ध। तथा भारत सरकार की जनगणना इत्यादि का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र सुलतानपुर जनपद अवध क्षेत्र के पूर्वी भाग में अयोध्या मण्डल के अन्तर्गत स्थित है। इसका अक्षांशीय विस्तार 25^0 59′ उत्तर से 26^0 40′ उत्तर तथा देशांतरीय विस्तार 81^0 31′ पूर्व से 82^0 41′ पूर्व तक मिलता है। इसके उत्तर में फैजाबाद, उत्तर–पूर्व में अम्बेडकरनगर, पूर्व में आजमगढ़, पूर्व–दक्षिण में जौनपुर, दक्षिण में प्रतापगढ़ और दक्षिण–पश्चिम में अमेठी जिले स्थित हैं। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 4436 वर्ग किमी0 है। यह

प्रदेश की राजधानी लखनऊ से लगभग 140 किमी0 दूर स्थित है। 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की जनसंख्या 3797117 है। जिसमें पुरूष संख्या 1914884 तथा महिला संख्या 1882531 है। 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद का लिंगानुपात 983 है। जिले की साक्षरता 69.27% तथा जनघनत्व 856 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है। जनपद सुल्तानपुर में कुल 5 तहसीलें हैं। 14 विकासखण्ड, 114 न्याय पंचायतें, 805 ग्राम पंचायतें तथा 17 थाने हैं।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य सुल्तानपुर जनपद में जनसंख्या की बढ़ रही भीड़ और इस भीड़ का जनपद पर प्रभाव, जनसंख्या घनत्व तथा साक्षरता आदि की स्थिति का विवेचना करना है।

शोध प्रविधि

अध्ययन क्षेत्र सुल्तानपुर में जनसंख्या गत्यात्मकता का अध्ययन द्वितीय आंकड़ों पर आधारित है। जनपद में जनसंख्या गत्यात्मकता के अन्तर्गत जनंसख्या–गत्यात्मकता,जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता आदि का अध्ययन किया गया है। अध्ययन की वैज्ञानिकता तथा सटीकता हेतु सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या गत्यात्मकता

सामान्यतः जब हम जनसंख्या गत्यात्मकता की बात करते हैं, तो इसको दो अर्थों में प्रयुक्त करते हैं, एक जनसंख्या की गतिशीलता तथा दूसरा जनसंख्या (मानव समूह) की गत्यात्मकता। जनसंख्या की गतिशीलता से अभिप्राय, जनसंख्या के विभिन्न तन्त्रों यथा,जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात, आयु संरचना, जनसंख्या सघनता–विरलता, साक्षरता आदि से है। जबकि जनसंख्या गत्यात्मकता में जनसंख्या का स्थानान्तरण सम्मिलित है। प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या गत्यात्मकता के विभिन्न तन्त्रों में गत्यात्मकता पर अध्ययन किया गया है।

जनसंख्या वृद्धि

किसी क्षेत्र की जनसंख्या गत्यात्मकता पर जनसंख्या के किसी अन्य कारक की अपेक्षा जनसंख्या वृद्धि का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। यद्यपि अन्य जनसंख्या विशेषताएँ जनसंख्या वृद्धि से निकट सम्बद्ध होती हैं। किसी प्रदेश की जनसंख्या वृद्धि उसके आर्थिक विकास, सामाजिक सजगकता, सांस्कृतिक आधार, ऐतिहासिक घटनाओं एवं राजनीतिक विचार धारा की सूचक होती है। अतः किसी स्थान विशेष की जनसंख्या में एक निश्चित अवधि में मात्रात्मक परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि कहते हैं, चाहे वह धनात्मक हो अथवा ऋणात्मक। सुलतानपरु जनपद की जनसंख्या में उतार–चढ़ाव देखने को मिलता है। 1951 से 2011 तक जनसंख्या वृद्धि कभी कम तो कभी ज्यादा होती रही है।

सारणी संख्या–01

सुल्तानपुर जनपद : जनसंख्या वृद्धि (1951–2011)

जनगणना वर्ष	सुल्तानपुर जनपद की कुल जनसंख्या	सुल्तानपुर जनपद की जनसंख्या वृद्धि (प्रतिशत)	उ0प्र0 की जनसंख्या वृद्धि(प्रतिशत)	भारत की जनसंख्या वृद्धि (प्रतिशत)
1951	1292949	+16.44	+21.8	+13.31
1961	1412984	+9.24	+16.7	+21.64
1971	1642928	+16.27	+19.7	+24.80
1981	2042778	+24.34	+25.4	+24.66
1991	2558970	+25.27	+25.61	+23.87
2001	3214832	+24.69	+25.85	+21.54
2011	3797117	+18.11	+20.22	+17.64

स्रोत–भारत की जनगणना हस्तपुस्तिका –2011

जनपद सुलतानपुर की जनसंख्या में प्रति दशक वृद्धि दर्ज की गयी है। 1951 में जहाँ जनपद की जनसंख्या 1292949 थी, वहीं 1961 में यह बढ़कर 1412984 हो गयी। इसी क्रम में जनसंख्या की वृद्धि जारी रही और 2011 में यह बढ़कर 3797117 हो गयी। जनगणना वर्ष 1951 से 2011 के मध्य प्रतिदशक जनसंख्या वृद्धि एक समान न होकर वृद्धि के प्रतिशत में अन्तर पाया जाता है। इस प्रकार सुल्तानपुर जनपद में जनसंख्या वृद्धि के काल क्रम को चार भागों में बाँटा जा सकता है–

1. मध्यम जनसंख्या वृद्धि काल – (1951)
2. मंद जनसंख्या वृद्धि काल – (1961–1971)
3. अति तीव्र जनसंख्या वृद्धि काल (1981–2001)
4. तीव्र जनसंख्या वृद्धि काल (2011)

मध्यम जनसंख्या वृद्धि काल (1951)

जनपद सुलतानपुर में आजादी के बाद से ही जनसंख्या वृद्धि के अनुकूल परिस्थितियॉ रही हैं। आजादी के बाद देश की जनता मे एक नयी सामाजिक चेतना का संचार हुआ,परिणामस्वरुप क्षेत्र की जनसंख्या मे तीव्र वृद्धि दर्ज की गयी, और जनसंख्या संपन्नता तथा खुशहाली की ओर अग्रसर हुई।पिछले दशक की तुलना मे जनसंख्या मे धनात्मक वृद्धि हुई,और जनसंख्या बढकर 1292949 हो गयी।इस प्रकार पिछले दशक की तुलना मे 16.44 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी।

मंद जनसंख्या वृद्धि काल (1961–1971)

जनपद सुलतानपुर की जनसंख्या वृद्धि वर्ष 1961 में मंद गति से रही। इस समय की भौगोलिक परिस्थितियाँ कुछ अनुकूल नही रहीं। वर्ष 1971 में वर्ष 1961 की तुलना में जनसंख्या में थोड़ी वृद्धि दर्ज की

गयी। जहाँ वर्ष 1961 में कुल जनसंख्यचा 1412984 रही, वहीं वर्ष 1971 में 16.27 प्रतिशत की दशकीय वृद्धि के साथ जनसंख्या 1642928 हो गयी। जनसंख्या की मंद वृद्धि के कारणों में रोजगार एवं धनोपार्जन हेतु जनसंख्या का अन्य प्रदेशों तथा जिलों में पलायन था।

अति तीव्र जनसंख्या वृद्धि काल (1981–2001)

जनपद की जनसंख्या वर्ष 1981 में पुनः तीव्र गति से बढ़ने लगी। इसके लिए उत्तरदायी कारणों में स्वास्थ्य सुविधाओं की सुलभता, मृत्युदर में कमी, शैक्षिक प्रगति,जागरूकता, सरकारी प्रयास आदि हैं। परिणामस्वरूप वर्ष 1981 में 399850 व्यक्तियों की वृद्धि हुई और 24.34 प्रतिशत की वृद्धि के साथ जनगणना वर्ष 1991 में जनसंख्या 2558970 हो गयी। इसी तरह वर्ष 1991 में 516192 व्यक्तियों की वृद्धि हुई और जनसंख्या वृद्धि 25. 27 प्रतिशत के साथ वर्ष 2001 में 3214832 हो गयी। पुनः 2001 में 655862 व्यक्तियों की वृद्धि हुई और 24.69 प्रतिशत की वृद्धि के साथ वर्ष 2011की जनसंख्या 3797117 हो गयी।

तीव्र जनसंख्या वृद्धि काल (2011)

यद्यपि जनपद की जनसंख्या इस अवधि में बढ़ी, किन्तु पूर्व के दशकों की तुलना में वृद्धि का प्रतिशत कम ही रहा। अतः वर्ष 2011 में 582285 व्यक्तियों की वृद्धि हुई और 18.11 प्रतिशत की वृद्धि के साथ वर्ष 2011 की जनसंख्या 3797117 हो गयी। इस अवधि में जनसंख्या वृद्धि में घटने की प्रवृति देखी गयी। इसका कारण जन जागरूकता तथा सरकारी प्रयास है।

चित्र–1

जनसंख्या वृद्धि दर (%)

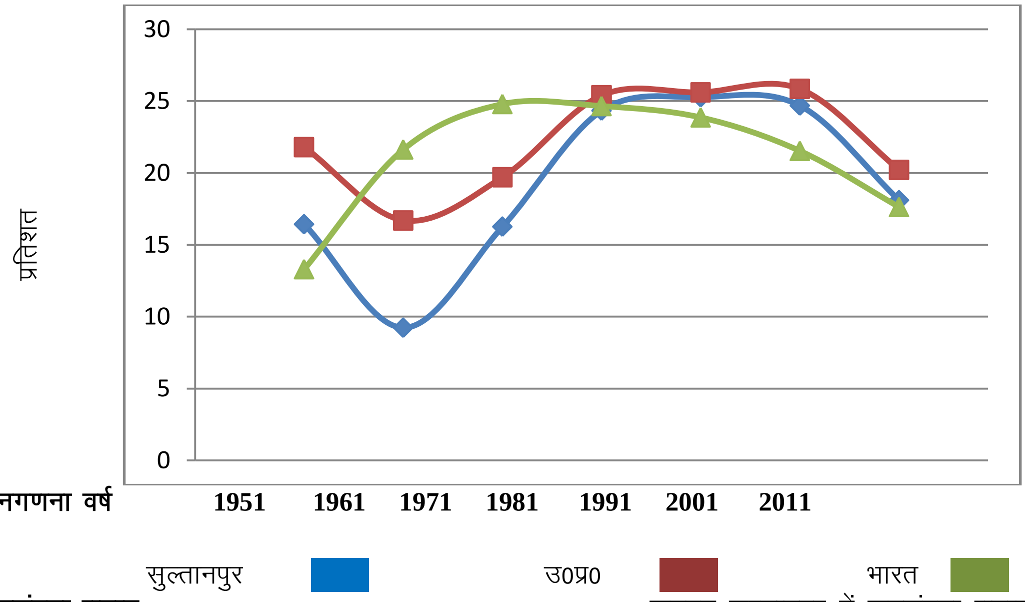

जनसंख्या घनत्व

किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या मूल्यांकन के सन्दर्भ में जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का विश्लेषण एक आधारभूत कारक माना जाता है। जनसंख्या घनत्व का तात्पर्य, जनसंख्या और धरातल का अनुपात से है, जिसे प्रति इकाई क्षेत्र व्यक्तियों की संख्या के रूप में अभिव्यक्त किया जात है। सारणी संख्या–02 से स्पष्ट होता है कि जनपद सुल्तानपुर में जनसंख्या घनत्व अधिक पाया जाता है। स्वतंत्रता के पश्चात् 1951 में जनसंख्या घनत्व लगभग 292 व्यक्ति/वर्ग किमी0 था, वह बढ़कर जनगणना वर्ष 2011 में 856 व्यक्ति/वर्ग कि0मी0 हो गया। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में विगत् 60 वर्षों में जनसंख्या घनत्व में काफी वृद्धि हुई।

सारणी संख्या–02

सुल्तानपुर जनपदः जनसंख्या गत्यात्मकता (1951–2011)

जनगणना वर्ष	घनत्व (प्रति वर्ग कि0मी0)	लिंगानुपात (प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या)	साक्षरता (प्रतिशत में)
1951	292	998	9.45
1961	317	1017	13.0
1971	371	970	17.0
1981	706	971	22.4
1991	710	933	38.7
2001	719	980	55.75
2011	856	983	69.27

स्रोत–भारत की जनगणना हस्तपुस्तिका– 2011

P: ISSN NO.: 2321-290X　　RNI : UPBIL/2013/55327　　VOL-6* ISSUE-3* November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X　　Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

इसी प्रकार अध्ययन क्षेत्र जनपद सुल्तानपुर के 14 विकास खण्डों को सारणी संख्या–03 से अवलोकन करें तो सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व दूबे पुर विकास खण्ड में 1152 व्यक्ति/वर्ग कि0मी0 तथा सबसे कम जनसंख्या घनत्व दोस्तपुर विकास खण्ड में 733 व्यक्ति/वर्ग कि0मी0 है। अन्य विकास खण्डों का जनसंख्या घनत्व इस प्रकार है– बल्दीराय 844, धनपतगंज–746, कुरेभार–917, कुड़वार–910, जयसिंहपुर–892, भदैंया–832, अखण्डनगर–795, लम्भुवा–813, प्रतापपुर कमैंचा–938, मोतिगरपुर–785, कादीपुर–919, करौंदीकलां–914 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मी0 है। वास्तव में जनसंख्या घनत्व में जो वृद्धि दृष्टिगत हो रही है, वह स्थानान्तरित जनसंख्या के कारण ज्यादा है, जिसमें ग्रामीण से नगरों की ओर पलायन है। इस पलायन का प्रमुख कारण शिक्षा, स्वास्थ्य, बेरोजगारी इत्यादि है।

चित्र–02

सुल्तानपुर : लिंगानुपात (1951–2011)

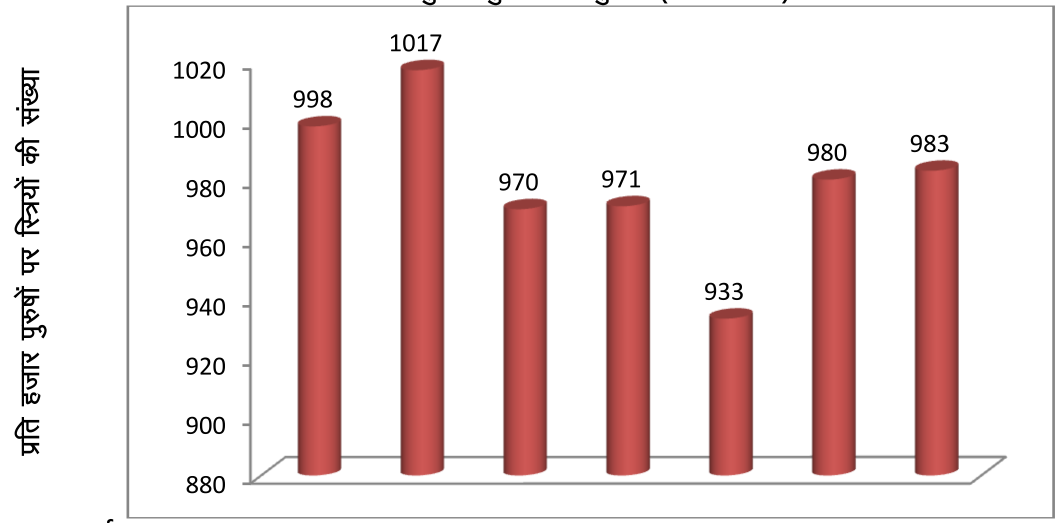

जनगणना वर्ष　　**1951　1961　1971　1981　1991　2001　2011**

लिंगानुपात

किसी भी विकसित व स्वस्थ समाज के निर्माण में स्त्री व पुरूष दोनों की बराबर सहभागिता आवश्यक होती है। जब भी दोनों के बीच असंतुलन उत्पन्न होता है, तो सामाजिक व्यवस्था के विघटित होने की आशंका उत्पन्न होती है। जनांकिकीय अध्ययन में किसी भी स्थान की जनसंख्या में लिंग एवं आयु संरचना का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इस प्रकार लिंगानुपात से तात्पर्य, स्त्रियों एवं पुरूषों के पारंपरिक अनुपात से होता है। जनपद सुल्तानपुर में लिंगानुपात का आकलन प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या के रूप में किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में लिंगानुपात स्वरूप असमान रहा है। सारणी सं0–02 से स्पष्ट है कि वर्ष 1951 में प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या 998 थी जो वर्ष 1961 में बढ़कर 1017 व्यक्ति हो गयी। वर्ष 1971 में पुनः घटकर 970 व्यक्ति हो गयी। वर्ष 1981 में 971, 1991 में 933, 2001 में बढ़कर 980 तथा 2011 में 983 व्यक्ति हो गयी। इस प्रकार जनपद सुल्तानपुर में लिंगानुपात में विभिन्नता दिखायी देती है।

सारणी संख्या–03

सुल्तानपुर जनपद : विकास खण्डवार जनसंख्या गत्यात्मकता (वर्ष–2011)

क्र0 सं0	विकास खण्ड	धनत्व (प्रति वर्ग कि0मी0)	लिंगानुपात (प्रति हजार स्त्रियों की संख्या)	सारक्षता (%)	क्र0 सं0	विकास खण्ड	घनत्व (प्रति वर्ग कि0मी)	लिंगानुपात	साक्षरता (प्रतिशत)
1	बल्दीराय	844	982	67.04	8	लम्भुआ	813	1035	70.67
2	धनपत गंज	746	986	70.9	9	प्रतापपुर कमैचा	938	1004	71.58
3	कूरेभार	917	981	70.26	10	दोस्तपुर	733	991	68.04
4	कुड़वार	910	974	71.39	11	कादीपुर	919	988	70.94
5	दूबेपुर	1152	964	71.74	12	अखण्डनगर	795	988	70.1
6	जयसिंहपुर	892	983	69.08	13	मोतिगरपुर	785	989	70.63
7	भदैया	832	987	71.05	14	करौदी कला	914	980	70.57

स्रोत: जिला जनगणना हस्त पुस्तिका–2011

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

इसी प्रकार उपर्युक्त सारणी संख्या–03 का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि जनपद के चौदह विकास खण्डों में लिंगानुपात में विभिन्नता पायी जाती है। सभी विकास खण्डों में लम्भुआ विकास खण्ड में सर्वाधिक लिंगानुपात 1035 व्यक्ति पाया जाता है। जबकि न्युनतम लिंगानुपात दूबेपुर का 964 व्यक्ति है। अन्य विकास खण्डों का लिंगानुपात इस प्रकार है–बल्दीराय–982, धनपतगंज–986,कूरेभार–981, कुड़वार–974, जयसिंहपुर–983 भदैया–987,प्रतापपुरकमैचा–1004,दोस्तपुर–991, कादीपुर–988, अखण्डनगर–988, मोतिगरपुर–989 और करौंदीकला–980 व्यक्ति है। अध्ययन क्षेत्र में लिंगानुपात में अन्तर का कारण सामाजिक चेतना में कमी व लड़कियों को हेय दृष्टि से देखा जाना है।

साक्षरता

साक्षरता से तात्पर्य, जब कोई व्यक्ति एक या एक से अधिक भाषा में अपने विचार लिखकर या पढ़कर समझ सके। साक्षरता एक ऐसा शब्द है, जो किसी समाज को सभ्य बनाकर उसके उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। शिक्षा मस्तिष्क के विकास के लिए अपरिहार्य है। जो समाज जितना शिक्षित होगा, वह उतना ही विकसित होगा। सारक्षता के द्वारा किसी समाज या देश की उन्नति का अनुमान लगाया जा सकता है। सारणी सं–02 में सुल्तानपुर जनपद में साक्षरता की गत्यात्मकता को प्रदर्शित किया गया है।

सारणी संख्या–02 का अध्ययन करने से पता चलता है कि जनगणना वर्ष 1951 में साक्षरता दर मात्र 9.45 प्रतिशत थी। किन्तु वर्ष 1961 में 13.0 प्रतिशत, वर्ष 1971 में 17.0 प्रतिशत, वर्ष 1981 में 22.4 प्रतिशत, वर्ष 1991 में 38.7 प्रतिशत, 2001 में 55.75 प्रतिशत तथा 2011 में साक्षरता दर बढ़कर 69.27 प्रतिशत हो गयी। जनपद में साक्षरता दर में निरंतर वृद्धि हो रही है। इसका कारण जन जागरूकता, शिक्षण संस्थाओं का विकास, सामाजिक–आर्थिक विकास, शिक्षा के द्वारा रोजगार प्राप्त करने की लालसा, तथा सरकारी प्रोत्साहन इत्यादि है।

इसी प्रकार सुल्तानपुर जनपद के चौदह विकास खण्डों की साक्षरता दर का अवलोकन करने पर विदित होता है कि सभी विकास खण्डों की साक्षरता में अन्तर पाया जाता है। विकास खण्डो में सर्वाधिक साक्षरता दूबेपुर की हैं, जहाँ की साक्षरता 71.74 प्रतिशत है। न्यूनतम साक्षरता 67.04 प्रतिशत बल्दीराय की है। शेष विकास खण्डों की साक्षरता इस प्रकार है– धनपतगंज–70.09 प्रतिशत, कुरेभार–70.26 प्रतिशत, कुड़वार–71.39 प्रतिशत, जयसिंहपुर–69.08 प्रतिशत, भदैया–71.05 प्रतिशत, लम्भुआ– 70.67 प्रतिशत, प्रतापपुर कमैचा–71.58 प्रतिशत, दोस्तपुर–68.04 प्रतिशत, कादीपुर–70.94 प्रतिशत, अखण्डनगर–70.1प्रतिशत, मोतिगरपुर–70.63 प्रतिशत, करौंदीकला–70.57 प्रतिशत है। सारणी–सं0–03 का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि विकास खण्डों के साक्षरता दर में पर्याप्त अन्तर है। किन्तु यह स्पष्ट है कि साक्षरता दर में निरंतर वृद्धि हो रही है, जिसका कारण सामाजिक चेतना में वृद्धि तथा सरकारी प्रोत्साहन है।

चित्र–03

सुल्तानपुर जनपदः साक्षरता (%) (1951–2011)

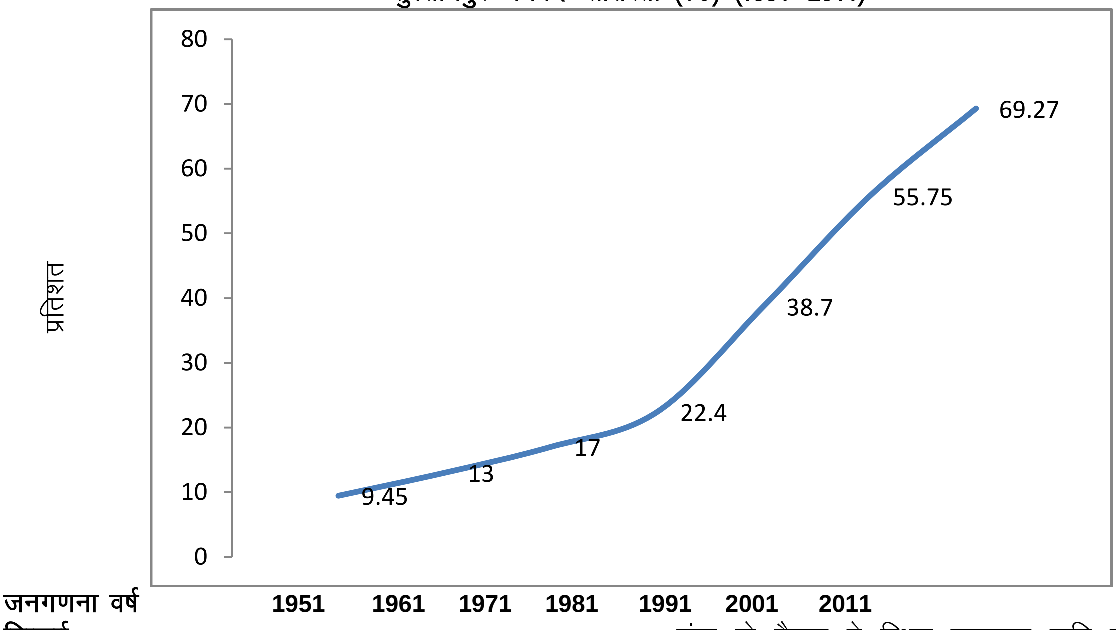

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र जनपद सुल्तानपुर में स्वतंत्रता के बाद से ही तीव्र सामाजिक–आर्थिक विकास हुआ है। यह क्षेत्र शिक्षा का केन्द्र है। प्रमुख नगरों को जोड़ने वाले सड़क तथा रेलमार्गों के जनपद से होकर गुजरने के कारण यहाँ परिवहन संचार का अच्छा विकास हुआ है। गंगा के मैदान मे स्थित उपजाऊ कृषि योग्य भूमि के कारण सघन जनसंख्या का बसाव पाया जाता है।

इस क्षेत्र की जनसंख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है, जिससे जनपद के संसाधनों पर जनसंख्या का दबाव बढ़ता जा रहा है। जनसंख्या वृद्धि के कारण अनेक पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। अतः यहाँ की

जनसंख्या वृद्धि पर परिवार नियोजन के विभिन्न साधनों द्वारा नियंत्रण पाया जाना आवश्यक है, जिससे यहाँ के लोगों का समाजिक–आर्थिक विकास हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *चाँदना, आर0सी0 (2014) 'जनसंख्या भूगोल',कल्याणी पब्लिशर्स नई दिल्ली,पृष्ठ 242.*
2. *मौर्य, एस0डी0 (2016) 'जनसंख्या भूगोल', प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृष्ठ 74,339.*
3. *सिंह, सविन्द्र (2016) 'पर्यावरण भूगोल', प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृष्ठ 225.*
4. *सिंह, जगदीश (2017) 'आर्थिक भूगोल के मूल तत्व', ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर,पृष्ठ 93–94.*
5. *भारत सरकार : भारत की जनगणना, जनगणना भवन, लखनऊ।*
6. *बंसल, सुरेश चन्द्र (2015) 'सांख्यिकी एवं शोध विधि तन्त्र', आर0के0 बुक्स, नई दिल्ली, पृष्ठ 201.*
7. *तिवारी, राजेन्द्र (2011) 'सांख्यिकीय डायरी', उत्तर प्रदेश अर्थ एवं सख्या प्रयोग, राज्य नियोजन संस्थान, उत्तर प्रदेश।*